श्री राधाकृष्ण मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव में माननीय अध्यक्ष का सम्बोधन

(नारायण विहार, देवली विहार, कोटा)

श्री राधाकृष्ण मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव के उपलक्ष्य में नारायण विहार, देवली विहार में आप सभी लोगों के बीच आकर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। मैं आप सभी लोगों को आज के पावन अवसर की शुभकामनाएं देता हूँ। आज कलश यात्रा के आयोजन पर मैं आपको शुभकामनाएं देता हूँ। कलश यात्रा जैसे आयोजन से समाज में भक्ति भाव के साथ एकजुटता की भावना मजबूत होती है। महिलाएं जिस उत्साह के साथ भगवान को कलश अर्पण करने के लिए एकत्र हुई हैं, यह अद्‌भुत है।

मुझे बताया गया है कि नारायण विहार में भगवान शिव जी का एक मंदिर पहले से हैं। और यहाँ रहने वाले सभी जनों ने अपने सामूहिक प्रयास से श्री राधा कृष्ण जी का यह भव्य मंदिर बनवाया है। मुझे आशा है कि सबके सहयोग से तैयार हुआ यह विशाल मंदिर यहाँ के लोगों के मन में भक्तिभाव को और अधिक प्रगाढ़ करेगा।

श्री राधा रानी और भगवान कृष्ण का प्रेम अलौकिक था। उनके प्रेम की ही पराकाष्ठा है कि चोट कान्हा को लगे तो पीर राधा को होती है। पुराणों में श्री राधारानी को भगवान कृष्ण की शाश्वत जीवन संगिनी कहा जाता है। उनका जीवन हमें आपसी प्रेम और सद्भाव का संदेश देता है। भगवान कृष्ण और राधारानी का प्रेम हमें सभी के साथ मिल-जुलकर रहने की सीख देता है। भगवान कृष्ण इस सृष्टि के स्वामी हैं और सब लीलाओं के रचयिता है। सनातन धर्म में कृष्ण ऐसे अवतार हुए हैं, जिनमें कई व्यक्तित्व और कई रूप एक साथ वास करते है।

भगवान कृष्ण का ऐसा व्यक्तित्व है, जिससे हर कोई प्रेम करता है। हर घर में उन्हें प्रेम करने वाले मिलते हैं। वो एक ऐसे अवतार हैं जो जीवन के हर रंग को अपने भीतर समाए हुए हैं। बच्चे हो या युवा, महिलाएं हो या वृद्ध जन भगवान कृष्ण से सभी पूजते हैं, उन्हें अपना आराध्य मानते हैं। क्योंकि कृष्ण का व्यक्तित्व ही ऐसा है जो सबसे जुड़ जाता है। हमारा भारतीय समाज कई वर्ग, समूहों और जातियों में बँटा हुआ है, लेकिन कृष्ण को आराध्य मानने वाले हर वर्ग और समूह में मिलते हैं। उनकी सादगी ही है जो उन्हें हर व्यक्ति से जोड़ती है।

कृष्ण एक प्रतापी राजा थे, दिव्य पुरुष थे; लेकिन वो गायों को संभालने वाले ग्वाला भी थे। कृष्ण को एक ग्वाले के रूप में देखा जाता है। ये हमें उनकी सादगी और सरलता बताता है। समाज के अंतिम व्यक्ति से जुडने के लिए और सबको सम्मान देने के लिए उन्होंने एक चरवाहे की भूमिका भी निभाई।

कृष्ण हमें सिखाते हैं कि जीवन की चाहे कैसी भी विकट परिस्थिति हो, हमें संयम रखना चाहिए। कितनी ही मुश्किल क्यों ना आ जाए, हमें मुस्कुराते हुए उसका सामना करना चाहिए। क्योंकि समस्याओं को देखकर घबरा जाना भी समस्याओं के समाधान का तरीका नहीं है, और समस्या से भाग जाना भी कोई तरीका नहीं है। मुस्कुराकर समस्या का सामना करना ही उससे निपटने का प्रभावी तरीका है।

भगवान कृष्ण के व्यक्तित्व की महानता है कि वो एक दोस्त के रूप में भी अद्भुत थे, तो वो एक गुरु के रूप में भी महान हुए। सुदामा के साथ उनकी मित्रता का किस्सा तो आप सब जानते ही हो, मगर इसके साथ ही हम देखते हैं कि कुरुक्षेत्र की रणभूमि में अर्जुन जब युद्ध लड़ने के लिए मना कर देता है, तब भगवान कृष्ण ने उन्हें कर्म करने का संदेश दिया था।

भगवान कृष्ण हमें महिलाओं के सम्मान और सुरक्षा की भी सीख देते हैं। महाभारत में जब दुशासन ने द्रौपदी का चीर हरण करने का प्रयास किया था। उस समय कृष्ण वहाँ मौजूद नहीं थे, मगर द्रौपदी उन्हें पुकारती है और कृष्ण उनकी रक्षा करते हैं। यह उनकी महानता थी। भगवान कृष्ण के मंदिर देश के हर राज्य में हैं। और देश ही नहीं बल्कि दुनिया के कई देशों में उनके मंदिर हैं। पूरे भारत में भक्ति आंदोलन में हम देखते हैं कि श्री कृष्ण का प्रभाव छाया रहा। आँखों से नहीं देखने वाले सूरदास ने भी कृष्ण की पूजा की, उनके बारे में लिखा, और उनकी बाल लीलाओं का अद्भुत वर्णन किया है। श्री कृष्ण को मानने में धर्म भी कभी आड़े नहीं आया। हम जानते हैं कि रसखान उनके बड़े भक्त हुए हैं, जिन्होंने कृष्ण के बारे में बहुत सुंदर रचनाएं की हैं।

आज इस भव्य आयोजन में शामिल होकर मुझे अति प्रसन्नता हुई। यह पूरा माहौल ही भगवान की भक्ति से सराबोर है।

आप सभी को राधे राधे। जय श्री कृष्णा।